लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवम् पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार

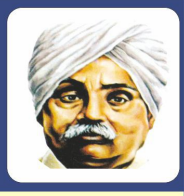

बर्डफ्लू (एवियन इनफ्लूएन्जा) रोग

एवियन इनफ्लूएन्जा (बर्ड फ्लू) रोग मुर्गियों में होने वाला एक भयानक संक्रामक रोग हैं। इस रोग का प्रकोप मुर्गियों में अचानक होता है तथा यह बड़ी तीव्रता से फैलता है जिससे मृत्यु दर 100 प्रतिशत तक पहुँच सकती है। इस बीमारी का संक्रमण मुर्गियों से मनुष्यों में भी हो जाता है।

कारण : इनफ्लूएन्जा टाइप ए विषाणु (एच 5 या एच 7 से)

फैलाव: स्वस्थ मुर्गियों में ये बीमारी रोग ग्रसित मुर्गियों के सांस व मल-मूत्र के संपर्क में आने से फैलती है। विषाणु से दूषित दाना या पानी के बर्तन के संपर्क में आने से भी यह बीमारी स्वस्थ मुर्गियों में फैल सकती है।

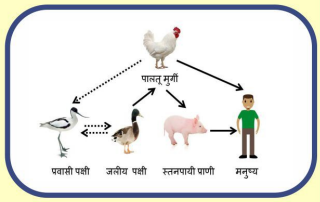

लक्षणः साँस लेने में कठिनाई,

मुँह व नाक से लार निकलना, दस्त लगना, चेहरे व गर्दन पर सूजन आना, पंखों का झड़ना, मुर्गियों के सिर व गर्दन का मुड़ना तथा लकवा हो जाना, अण्डों की पैदावार कम होना, मुर्गियों की कलंगी, गर्दन एवं पैरों में नीले-लाल रंग के धब्बे दिखाई देना।

निदान जांचः

लक्षण, शव-परीक्षण एवं पीद्र सीद्र आरद्र जाँच द्वारा ।

मनुष्यों में संक्रमणः

यह बीमारी प्रभावित मुर्गियों के संपर्क में आने से मनुष्यों में भी हो सकती है । मनुष्यों में यह बीमारी संक्रमित पक्षी के मल, नाक के स्त्राव, मुंह के लार या आंखों से निकलने वाले पानी के संपर्क में आने से फैलती है। संक्रमित मनुष्यों के गले में खराश, बुखार, नाक बहना, खांसी, दस्त, सिर दर्द, आँखों में सूजन व लाली, मांसपेशियों में दर्द इत्यादि लक्षण देखने को मिलते हैं ।

इलाज एवं बचाव :

इस बीमारी का कोई कारगर उपचार नहीं है । बीमारी के लक्षण दिखते ही पशु चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए। एक फार्म से दूसरे फार्म में आवाजाही प्रतिबंधित करनी चाहिए। मृत पक्षियों को खुले में नहीं फेंकना चाहिए।
बीमार मुर्गियों के सम्पर्क में आते वक्त या छुते समय व्यक्तियों को ऐप्रन, फेस मास्क, टोपी, गम बूट चश्मा आदि पहनना चाहिए। हाथों की सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य एवं जानपदिक रोग विज्ञान विभाग